मानव मन्दिर

फकीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट

सुतेहरी रोड, होशियारपुर

FORM I
(See Rule 8)

Place of Publication	Hoshiarpur
Date of Publication	10th of every month
Periodicity of Publication	Monthly
Printer's Name	M. R. Bhagat
Nationality	Indian
Address	Manavta Mandir, Hoshiarpur
Publisher's Name	M. R. Bhagat
Nationality	Indian
Address	Manavta Mandir, Hoshiarpur
Editor's Name	M. R. Bhagat
Nationality	Indian
Address	Manavta Mandir, Sutehri Road, Hoshiarpur.
Name and address of individuals, who own the Manav Mandir or partners, or shareholders, holding more than one percent of the total capital.	Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur.

I, M. R. Bhagat hereby decclare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Dated : 7-8-79 *Signature of Publisher*

nted and Published by M. R. Bhagat at Shiv Dev Rao ress, Manavta Mandir, Hoshiarpur. for the Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur.

printing by R.K Sood

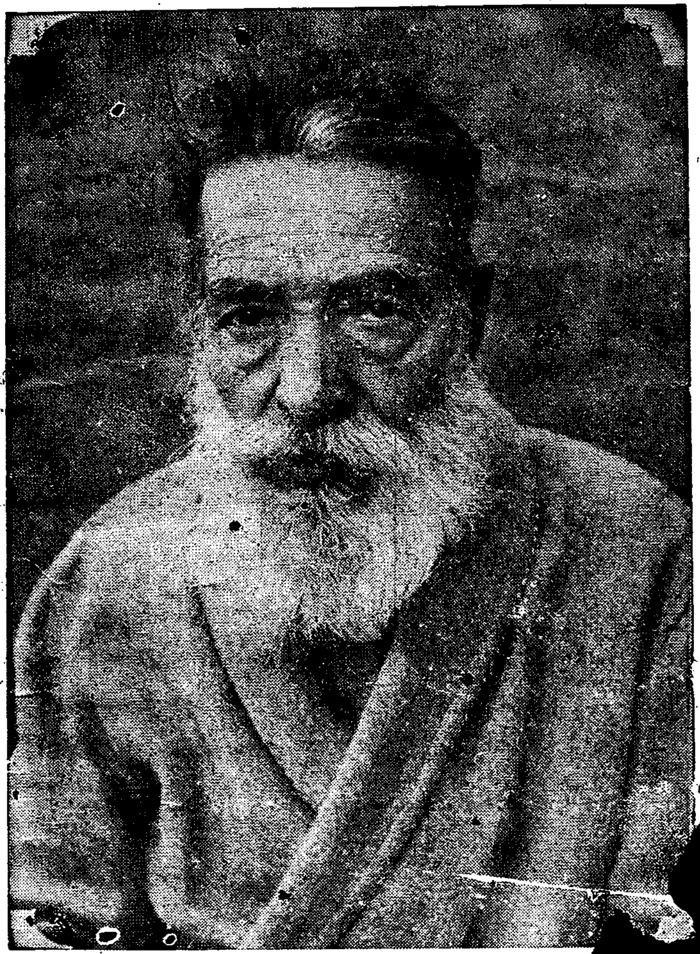

परमसन्त, परमदयाल
फकीर चन्द जी महाराज

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

मासिक—

मानव मन्दिर

गुरु का जन्म दिन

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मंदिर होशियारपुर ।

२४-११-१९७९

तूँ दयाल है दया की मूरत, तेरी दया का दान मिले ।
भक्ति मिले शुभ शक्ति मिले, सतसँगत में गुरु ज्ञान मिले ॥
जग की सहज ही कठिनाई, सुख साधन का है अवसर ।
नाम मिले सतधाम मिले, साध सेवा सन्मान मिले ॥
टेढ़े जतन को करदे सीधा, युक्ति निराली बतला दे ।
ड़े हीं में समझा दे तू, सँत मत की पहचान मिले ॥
ज्ञान के तीन रूप हैं स्वामी, अनुभव है उनकी चोटी ।
अनुमान मिले, अनुमान के साथ प्रमाण मिले ॥

राधा स्वामी सत गुरु दाता, हम सब हैं तेरे सेवक।
सहज योग की सहज समाधका, सुमिरन भजन और ध्यान मिले।

राधास्वामी

मैं अपने आप से पूछता हूं फकीर चन्द, इस जीवन में जो तूने सफ़र कीया, तप किया, जप किया, गुरु सेवा की या अभ्यास किया इस से तुम को क्या मिला ? आज मघर की नौ तारीख है, क्योंकि मेरा जन्म दिन था, कुछ आदमियों ने ये कोशिश की कि जन्म दिन मनाया जाये। मेरी आत्मा ये कहती है कि अगर तो जन्म दिन बाप का, पती का या अपना मनाया जावे तो और बात है मगर गुरु का जन्म दिन जो मनाते हैं वह अज्ञानी हैं। गुरु नाम है ज्ञान का समझ का, विवेक का और वो हर इन्सान के अपने अन्तर रहता है, बाहर नहीं रहता, गुरु न जन्मता है न मरता है। मेरी सारी आयु गुरु मत में गुज़र गई। मैं भी शिवरात्री को ऐसे ही आरतियां किया करता था, सोने के ताज, सन्दल के सिंहासन चांदी के हुक्के और ज़रीदार कपड़े भेंट करता मगर मुझे पता लगा कि गुरु अजर अमर अविनाशी

वो न कभी पैदा हुआ, न होता है, न आगे होगा। वो नित्य है। इस बात को जानने के लिये बाहर के किसी पूरे गुरु को सँगत और उस के बचनों को सुन कर बात को समझने की ज़रूरत है।

तूं दयाल हैं दया की मूरत तेरी दया का दान मिले।
भक्ति मिले शुभ शक्ति मिले, सतसंगत में गुरु ज्ञान मिले।

ये प्रार्थना बाहर के किसी कामिल गुरु के आगे की जाती है। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं फकीर चन्द, अब तेरी आयु चुरानवें बर्ष की होने वाली है। पता नहीं शेष कितनी है यहां से चले जाना है। तू बता ये जो पाखण्ड का जाल बनाया, 'इन्सान बनों की आवाज़ उठाई, क्या किया। हस्पताल खोले, शिशु केन्द्र खोला, प्रेस लगाया, क्या तू किसी को ज्ञान दे सकता है ? पहले ये बता कि तुम को क्या मिला ? मुझ को ये मिला कि मुझे पता लग गया कि मैं कौन हूं। बस, ये पता लग गया। इस, के सिवाय मुझे कुछ नहीं मिला। संशय चले गये भ्रम चले गये और एक प्रकार की शान्ति मिली, मन शान्त हो गया। बाकी जितनी बातें लोगमेरे विषय में

करते हैं, मैं शपथपूर्वक कहता हूं कि मैं कुछ नहीं करता। ये हर आदमीका अपना कर्म है या अपना विश्वास है जिस के सहारे उस को कोई चीज़ मिलती है। ये तो है ज्ञान जो मैं देता हूं या मैं ने प्राप्त किया है। लोग ये समझते हैं कि गुरु फूँक मार देगा, ये ग़लत है। आदमी आशाओं के वश में भेड़ चाल चलते हैं। रहस्य को नहीं ससझते। हाँ इतना हो सकता है कि जिस प्रकार छोटा बच्चा होता है और मां होती है, वो उसकी बात को नहीं समझता वो उसकी बात नहीं समझती मगर जब वो आपस में मिलते हैं तो प्रेम करते हैं। दोनों के प्रभाव एक दूसरे पर पड़ते हैं। दिल मिल जाते हैं। माँ भी खुश हो जाती है और बच्चा भी खुश हो जाता है हालांकि कोई बात चीत उन में नहीं हुई। आप समझ गये मेरी बात को ? आज प्रातः नारायण दास बिस्तर का गद्दा मेरे लिये लाया। सोचता हूं, इतना बोझ लोगों का ले कर मैं कहां जाऊँगा ? क्या मेरे लिये भी कोई ठिकाना है ? कोई नहीं। इतना मेरे पास नहीं है कि मैं इन सब का बदला दे दूं। हां, मन्दिर की बात छोड़ दो, जितना मरज़ी कोई दे इस का मुझे कोई अफ़सोस

नहीं। आज 94 साल की आयु मेरी शुरू हुई है, दाता दयाल ने हुकम दिया था चोला छोड़ने से पहले तालीम को बदल जाना। मैं क्या शिक्षा बदलूँ, जो मेरे साथ बीती है मैं कहता हूं।

कोई किसी प्रकार का मुझे दावा नहीं कि मुझे कुछ मिल गया। दाता दयाल जी महाराज का शब्द है:—

तू दयाल है दया की मूरत—तेरी दया का दान मिले
भक्ति मिले शुभ शक्ति मिले—सतसंगत में गुरु ज्ञान मिले—

ये तीन चीजें हैं जो हासिल की हैं, मैं वो देता हूं सतसँगों में। पहला ज्ञान तो यह है जो देता हूं कि ऐ इन्सान, सब कुछ तेरे अपने मन के अँतर है, बाहर कुछ नहीं। दूसरा यह है कि :—

कर्म जो जो करेगा अँत में भोगना पड़ना

लाख तुम फ़कीर चन्द, खुदा मियाँ 'ईश्वर' परमेश्वर को गुरु मान लो जो कर्म तुम ने किये हुए हैं उनके फल से तुम बच नहीं सकते। कैसे कहूं। हम

अज्ञान की भक्ति करते हैं। अब देखो, मक्का शरीफ है, लोग विश्वास से वहां गये, मस्जिद पर कबज़ा हो गया, वापस आते हुए हवाई जहाज की दुर्घटना में 150 आदमी मर गये। क्या वे कर्म चक्र से बच सके? यही अज्ञान है जिसे मैं दूर करना चाहता हूं। कई आदमी हरिद्वार कुम्भ पर जाते हैं, रास्ते में कई मुसीबतें आती हैं फँस जाते है, कई आदमी मेरे पास दूर से आते हैं रास्ते में उन को बुखार हो जाता है। तो ये जितना झगड़ा है अज्ञान का है। गँगा में लोग जाते हैं वहां कितने ही डूब जाते हैं, मर जाते हैं। इसी भ्रम और इसी अज्ञान की वजह से हमारी मानव जाति आपस में बटी हुई है और हम मुसीबतों में पड़े हुए हैं। कोई कहता है मेरा खुदा मक्का में रहता हैं, कोई कहता है यूरोशलम में रहता है, कोई कहता है होशियारपुर में या किसी और जगह रहता है, ये सब भ्रम है। ऐ इन्सान,अगर सच पूछता है तो जो कुछ है तेरा अपना ही मन है दूसरा कुछ नहीं। क्योंकि मेरे जिम्मे यह काम लगाया था, मैंने ये काम शुरू किया। मकड़ी का जाला फैल गया। आप लोग भी आते हैं मगर मुझे कोई अफ़सोस नहीं क्योंकि मैं ने किसी से धोखे की

कोई बात नहीं कही, स्वार्थ के लिये किसी को कोई हेरा फेरी वाली बात नहीं कही,

जग की सहज हो कठनाई, सुख साधन का है अवसर,

दाता दयाल जी महाराज कहते हैं कि ऐसा ज्ञान दे कि जगत की कठिनाई आसान हो जाये, कठिनाई क्या होती है ? दुख, मुसीबत। सब से बड़ी मुसीबत अगर हमको कोई है तो हमारी भूख है, पैसे की ज़रूरत है, पैसा नहीं तो कुछ नहीं। मूर्ख से मूर्ख आदमी है अगर पैसे वाला है तो लोग उस के आगे सिर निवाते हैं। किसी बुद्धिमान के पास खाने को नहीं है तो उसे कोई पूछता नहीं। तो क्या बाहर का गुरु कुछ बता सकता है ?

क्या कोई ऐसी करामात है जिस के द्वारा गुरु हमारी बाहर की कठिनाई दूर कर दे ? हां, वो बचन कहता है। क्या कहता है ? ज्यादा कठिनाई इन्सान को उसकी स्वास्थ्य की खराबी होती हैं। इस के लिए मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य रखो ज्यादा हेराफेरी धोखा किसी के साथ मत करो।

बस, मैंने तो जिस दिन से ये देखा कि बड़े २ महात्मा बुरी बुरी मौत मरे और इनके साथ क्या कुछ नहीं गुज़री। यदि नाम लूं तो उनके अनुयाई बुरा मनायेंगे। **They suffered a miserable death.** क्योंकि इन के कर्म ऐसे थे। मैं अगर सच्ची बात आपके साथ नहीं करता और आपको अपने साथ बांधने के लिए रोचक और भयानक बातें करता हूं तो मैं दण्ड से नहीं बच सकता। मुझे एक खुशी है कि मैंने अपने जीवन में सिवाय काम के अंग के जो मैंने अपने घर में ज्यादा भोगा, मैंने और कोई पाप नहीं किया। किसी के साथ धोखा नहीं किया। घर और बाहर के काम काज में या पंथ में आकर किसी के साथ बिल्कुल धोखा नहीं किया। मेरा सच्चाई का व्यवहार रहा। अब भी सच्चाई का व्यवहार है। इस में खुशी है। तो ये चीज़ें कब मिलती हैं? जब सतसंग मिल जाता है। मगर सतसंग किनका? उनका नहीं जो अपने डेरे बनाना चाहते हैं। जिनको अपने आपका पता नहीं है या आप धोकेबाज़ हैं। मैं बड़ा सत्य प्रिय आदमी हूं। सारे एक जैसे नहीं होते, मगर आजकल का

गुरुवाद एक तरह का ठगवाद बना हुआ है। इसमें गुरुओं का भी कोई दोष नहीं, हम लोग सच्चाई सुनने के लिए जाते नहीं। दुनियां की आशायें लेकर जाते हैं।

नाम मिले सतधाम मिले, साधू सेवा सनमान मिले

अब इन्होंने कह दिया "नाम मिले"। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं फकीर चन्द, मर जायेगा, कुष्टी होकर मरेगा यदि झूठ बोला। तूं बता तुझे नाम मिल गया? नाम है क्या? कई कहते हैं शब्द नाम है। ये असली नाम प्राप्त करने का उपाय है। तुम किसी को कहते हो तुम्हारा क्या नाम है भई? यानी तुम कौन हो? तो जिस आदमी को गुरु मिल जाता है उसको साधन करने के बाद पता लग जाता है कि मैं कौन हूं। मुझे नहीं पता कि जो कुछ मैंने समझा ये ठीक है या गलत। मुझे तो ये पता लगा कि मैं एक चेतन का बुलबला हूं। बस, मेरे अन्तर एक 'मैं' आई। उसने मुझे बाप बेटा, चेला और गुरु बनाया और जो कर्म किया सब मेरी 'मैं' ने किया। एक शरीर की 'मैं', एक मन की 'मैं', और

एक आत्मा की 'मैं' । इन तीनों में तो 'मैं' फंसता नहीं। जो मेरी सुरत की 'मैं' है वो अभी तक मेरी गई नहीं और पता नहीं जीवन में जायेगी भी या नहीं। तो मैं नाम किस को समझता हूं ? मैं अपनी आत्मा को पूछता हूं तुझ को क्या नाम मिला ? मैंने शब्द बहुत सुने। बीनें सुनीं, रौशनियां देखी जिसका कोई हिसाब नहीं। मगर बीनें सुनने और रोशनियां देखने के बाद क्या मैं घर में कामी नहीं हुआ ? ये एक स्वाल है जो मैं अपने आप से पूछता हूं। कोई शक नहीं मेरे सन्तान नहीं थी, दाता दयाल जी महाराज ने कहा था सन्तान पैदा करो। अगर मैं स्त्री के पास केवल सन्तान के लिए जाता तो मुझे कोई पाप नहीं था। मैं तो स्वाद में फँस गया। तो मेरा वो शब्द सुना हुआ या जो नाम मिला हुआ था उसने क्या किया ? जब मैं शब्द सुनता था उस समय की फोटो वो दीवार पर लगी हुई है। तो फिर क्या बन गया ? अब ये बना कि मुझे पता लग गया कि मैं हूं कौन, एक चेतन का बुलबुला हूं। अगर मैं कुछ बन गया होता या ये गुरु कुछ बन गये होते, सतलोक पहुंच गये होते तो यह अपना

कुछ बना गये होते। ये बड़े २ गुरु आप अन्त में सालों बीमार रहे। मैं सोचता हूं, इन गुरुओं को वहां पहुंच कर अगर कोई शक्ति मिली हुई होती तो अपनी किस्मत को आप बना लेते। उनके अपने बच्चे मर गये, दस नम्बर के बदमाश हो गये, इन गुरुओं की अपनी औरतों से नहीं बनती थी, यह देख कर मेरे मन में उदासी आ गई है। मैं तो अब फँसा हुआ काम करता हूं वरना मुझे इन पंथों मज़हबों से इतनी उदासी है कि जिसका कोई हिसाब नहीं। मैं सोचता हूं हम गृहस्थियों के साथ इतना धोखा फ़रेब, इतनी चारसौबीस इन महात्माओं ने की है जिसका कोई हिसाब नहीं। ये जो कुछ है, अपने ही विश्वास का खेल है। अब देखो इन अलग अलग मज़हबों के जो पवित्र स्थान हैं क्या वहां खुदा, हज़रत ईसा या अकाल पुरुष है? कुछ नहीं। यही अज्ञान है जिस अज्ञान के पीछे दुनियां मरती है, हम आपस में झगड़ा करते हैं। इस तरह मानव जाति बट गई।

तो मैं ने नाम को क्या समझा? मुझे शांति कैसे मिल गई कि ये जो कुछ हो रहा है, जिस प्रकार

की प्रकृति से जो बना है, वैसा वैसा वो काम करता है, खेल करता है। अगर मैं वहां पहुंच कर कुछ बन गया होता तो कुछ कर सकता। जिस को मैं कुछ नहीं कर सकता। जो कुछ मिलता है उसको अपने विश्वास से मिलता है। ये ठीक है, मेरे पास सिवाय शुभ भावना के और कुछ नहीं। जिसकी मरज़ी हो मेरे सतसँग में आये या न आये, मेरी कोई किताबें पढ़े न पढ़े, बात सच्ची जो मैंने समझी है वो कहता हूं। मगर मैं दावा नहीं करता कि जो कुछ मैं कहता हूं ये पूर्णतय: सत्य है। मेरी समझ में ये बात आई है। मेरा रूप लोगों को स्वप्न में, जाग्रत में, हर जगह मदद करता है, मुझे कुछ पता नहीं होता, मैं ख़ुद हैरान होता हूं।

मैं उन को जानता नहीं। ये क्या खेल है ? इस तजुर्बे से मैं कहता हूं कि ऐ इन्सान, जो कुछ है तेरा अपना विश्वास और तेरा अपना इमान है, गुरु ने केवल तुम को सच्ची बात बतानी है, सच्चा ज्ञान देना है। सतगुरु किसे कहते हैं ? गुरु नाम है जो

अन्धकार को दूर करे, सतगुरु नाम है जो सच्चाई ब्यान करके जीव के अज्ञान को दूर करदे। मगर दुनियां अज्ञान को दूर नहीं करना चाहती। क्यों? क्योंकि अज्ञान में आनन्द है, ज्ञान में आनन्द नहीं। ज्ञान में शांति है। वहम चले जाते हैं, आदमी शांत हो जाते हैं। बाकी के जितने काम हम करते हैं ये अज्ञान की वजह से करते हैं। अब नागी साहिब भी आये हैं। ये आप को चाय पिलायेंगे, मिठाई खिलायेंगे। अज्ञान नहीं तो क्या है? क्या चाय पिलाने से, मिठाई खिलाने से ये सत लोक चले जायेंगे? सोचो। इन को क्या कहूं, मैं आप करता रहा हूं वो मेरा अज्ञान था और दाता दयाल जी महाराज मुझे फटकारा करते थे। मेरा उन्होंने कभी दिल नहीं तोड़ा मगर वो कहा करते थे कि अभी तू मंजिल पर नहीं पहुंचा काल और माया ने तुम पर हमला किया हुआ है। ये जो काम मुझे दिया था मेरे पागलपन को दूर करने के लिये दिया गया था ताकि मेरी अनुभव रूपी आँख खुल जाये। अब मुझ से ...र पूछा जाये तो जो संतमत में ...े हैं मैं उनको अज्ञानी समझता हूं

और उन को दिवाना समझता हूं। अब, हुज़ूर महाराज का अपना ही प्रेम था जो उन्होंने स्वामी जी महाराज से कुछ लिया, बस, जो कुछ है तुम्हारा अपना खेल है। अपने ही मन का खेल है। कुछ और नहीं।

टेढ़े जतन को करदे सीधा, युक्ति निराली बतलादे
थोड़े ही में समझा दे तूं, सँत मत की पहचान मिले

अब इस शब्द को सुन कर, क्या मैं हक नहीं रखता अपनी आत्मा से पूछने के लिये कि तू जो सत्संग का काम करता है तू टेढ़े यतन को सीधा कर सकता है? हां, इस को हल करने के लिये, मैं ने आयु खो दी। अगर इन्सान केवल अपने हृदय को शुद्ध रख कर प्रातः और सायं उस परम तत्व आधार के हवाले अपने आप को करता रहे सच्चा बन कर और अपनी ज़ात के लिये किसी के साथ धोखा फ़रेब न करे तो उसे किसी और करनी की जरूरत नहीं है। अब मैं यही करता हूं। शरणागतम् बस, मुझे यहां शांति मिलती है। ये शांति का सब

से आसान तरीका है। तुम अपने अन्तर में सच्चे बन कर पुकार करो, वो देता है। मेरे पास रोज़ चिट्ठियां आती हैं जो मेरे रूप को मानते हैं, सच्चे दिल से पुकार करते हैं। उन के सभी काम हो जाते हैं और मुझे बिल्कुल पता नहीं होता।

ये है टेढ़े जतन को सीधा करना, सब से आसान तरीका ये है, **Be true to your own self** अपनी आत्मा को दुखी मत रखो उसकी शरणागत में रहो नियत को साफ़ रखो बस मेरी समझ में ये सब से आसान मार्ग है। मैं यही करता हूं। बचपन में भी यही करता था मगर इन पँथ की बानियों ने मुझे पाग़ल बनाया हुआ था। मैं समझना चाहता था इन पँथ की बानियों का क्या मतलब है। अब मैं समझ गया और वो समझ मुझे तब आई जब मन के रूप को समझ कर अनुभव प्राप्त करके मैं मन को छोड़ गया। बस, सच्ची बात तो ये है कि ये समझ तब आती है जब उस की दया होती है।

ज्ञान के तीन रूप हैं स्वामी, अनुभव है उन की चोटी
शब्द मिले अनुमान मिले, अनुमान के साथ प्रमाण मिले

अनुभव क्या है इस, को प्रत्येक आदमी नहीं समझ सकता। अनुभव कहने में नहीं आता, लफ़्ज़ों का जाल होता है। अनुभव एक हिस्सेबातन है समझ कि जिस से इन्सान हर एक चीज़ को समझ के शांति प्राप्त करता है और जिस से वो हर वस्तु का यथा योग्य व्यवहार करता है। मुझे ये मिला और कुछ नहीं मिला।

राधा स्वामी सतगुरु दाता, हम सब हैं तेरे सेवक
सहज योग की सहज समाध का, सुमरण भजन और ध्यान मिले

सहज योग, यानी बिल्कुल आसान, बस, एक को मानो। मैं नहीं कहता तुम फकीरचन्द को मानो, गुरू शुरू में उस का एक रूप मानना पड़ता है। जो केवल फकीरचन्द को गुरु मान कर पूजते हैं। वे अधूरे हैं। शुरू शुरू में सब को यह करना पड़ता है, इस को मैं मानता हूं। मगर to born in a church is a blessing & to die in a church is a curse इस के मायने ये हैं कि किसी मज़हब में पैदा होना मुबारिक है मगर किसी मज़हब में मर

जाना ये बुरा है। तो आज था जन्म दिन, इस के सिलसिले में मैं ने बहुत कुछ आप को कह दिया, नागी साहब आये हैं, अब देखो, यह आप को क्या क्या खेल खिलाते हैं, मिठाई खिलायेंगे चाय पिलायेंगे।

सब को राधास्वामी

सत्संग हजूर परमदयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

19-12-1979

गुरु की संगत से हटेंगे, कर्म माया काल सब ।
काट देगा तू सहज में, आप ही भव जाल सब ।।

मुख साधन संग सत का, और शेष है समझ गौण ।
इससे सूझेगी परमगति, तदगति की चाल सब ।।

जिसने पाया पाया सतसंग से भक्ति ज्ञान गम ।
तू उतारेगा विवेक और, तरकना की खाल सब ।।

कुछ दिनों संगत हो कुछ दिन, नाम कुछ दिन मुक्त गति ।
इसके पीछे पद है सत का, सत की रीती पाल सब ।।

अर्थ धर्म और काम मुक्ति, की है कुंजी सत का संग ।
राधास्वामी संग कर, दे काट अब जंजाल सब ।

मैं नाक़ कटों में शामिल नहीं हुआ, न ही झूठे गुरुबाद के नज़दीक गया ये मेरे गुरु महाराज की बाणी हैं। अब जो आदमी इस को सुनेगा वो क्या करेगा ? बानी को पढ़ कर पागल होगा या नहीं गुरु की संगत में आयेगा या नहीं जायेगा ताकि उसके कर्म कट जायें ? मगर क्या लोगों के कर्म कट गये ? अब जो गुरु बने हुए हैं या जिन्होंने यह शब्द लिखे उनके कर्म कट गये ? जिन्होंने यह शब्द लिखे हैं क्या उनके माया काल कर्म कटे ? राधास्वामी दयाल बीमार रहे। कबीर साहिब 10 साल दर्द गुर्दा से बीमार रहे। और गुरुओं का हाल देखो क्या हुआ।

मैं कहता हूं कटते हैं मगर जिस तरह दुनियां समझती है कि कटते हैं यह ग़लत है। कैसे कटेंगे। गरु की संगत में जाकर बात समझकर भेद पाओ तब तुम्हारे सारे कर्म कट जायेंगे। जब तक संगत में जाकर वचन को सुन कर समझोगे नहीं तब तक यह कैसे सम्भव हो सकता है कि केवल गुरु की संगत में जाकर बठकरके आप के कर्म कट जायेंगे।

"काट देगा तू सहज में, आप ही भव जाल सब" ॥

यह एक नुक्ता है। गुरु की संगत में जाकर फिर क्या होगा। गुरु तुम्हारे काल कर्म नहीं

काटेगा, तुम आप ही काटोगे। अहा! किसके आगे रोऊं व पीटूं। मेरी बात कौन सुनता है। बाणी की ओर ध्यान दो। क्या लिखा हुआ है।

"गुरु की संगत से हटेंगे कर्म माया काल सब,
काट देगा तू सहज में आप ही भव जाल सब।

कैसे हटेंगे ? गुरु भेद बतायेगा कि असली बात क्या है। उसके बचनों को सुनोगे तो तुम्हें सच्ची समझ आ जायेगी फिर तुम उस समझ व ज्ञान से आप ही अपने जंजाल को काट सकते हो। अगर तुम नहीं काटना चाहते तो न काटो। गुरु क्या करेगा ? बाहिर के गुरु नें केवल समझ देकर सच्चाई बता देनी है। मगर दुनियां के लोग दुनियां में इतने फंसे हुए हैं कि उनकी समझ में सच्चाई आनी मुशकिल है। अब यह लाख रुपये का शब्द है।

अगर कोई इसे समझ ले तो।

"काट देगा तू सहज में आप ही भव जाल सब,

मैं गुरु की संगत में गया था उनकी वाणी समझ में नहीं आती थी। इसीलिए उन्होंने यह काम दिया था। जब से मुझे इस असली भेद का पता लगा कि ओह! मैं तो किसी के अन्दर नहीं जाता। तो क्या यकीन हुआ कि जो कुछ किसी को मिलता है उसका अपना मन है। दूसरे शब्दों में बस इस विचार से कि मैं तो कहीं जाता नहीं यह यकीन हो गया कि जो कुछ किसी के अन्दर फुरता है वह उसका अपना ही विश्वास है, अपनी ही श्रद्धा और यकीन है। यह मन और माया है। तो मेरी आँख खुल गई। मैं अगर काटना चाहूं तो अपने मन के सारे ख्यालों को आप काट सकता हूं। और क्या बाहर के गुरु ने मुझे बचाना है। अगर कोई इन्सान अपने कर्म को बदलना चाहे तो वह स्वयं बदल सकता है अपने विश्वास, प्रेम और अपनी करनी से। गुरु ने केवल समझ देकर

सच्चाई बता देनी है। गीता ! तुम आती हो। यह समझदारी नहीं आती जब तक काफी सतसंग और साधन न किया जाये। साधन का अर्थ है मन को काबू में करना।

यह ठीक है कि तुम मन्दिर की मदद करते हो। मगर मैं आप लोगों की आंखों में मिट्टी डालकर सहायता लेने को तैयार नहीं हूं। यद्यपि मुझे सहायता की ज़रूरत है मैं इससे इन्कार नहीं करता मगर जो मैंने सच्चाई समझी है और जिस काम के लिए ये मन्दिर खोला है वह आपको बता देता हूं कि जो आदमी एक जगह से दूसरी जगह जाता है वह यह आशा रखे कि उसे कुछ मिल जायेगा। उसको कुछ नहीं मिलेगा। एक पर विश्वास रखो मगर वह एक कोई आदमी नहीं है वह तुम्हारे अन्तर एक वस्तु है और वह तुम्हारा अपना ही आप है। तुम्हारी ज़ात है जो सत है। जो आदमी अपने अन्तर उससे बाहिर जाता हैं उसको कुछ नहीं मिलता। जो अपने अन्दर में ठहरता है उसे मिलता है। यह मैंने शब्द सुना है। मास्टर मोहन लाल !

आप देख लो सन्त की बाणी को सन्त ही समझ सकता है। हरेक आदमी नहीं समझ सकता।

"गुरु की संगत से हटेंगे, कर्म माया काल सब
काट देगा तू सहज में आप ही भव जाल सब।"

अब देख लो कितनी सच्चाई की बात करते हैं। मगर इस तरह से इशारा किया कि प्रत्येक आदमी इस शब्द को समझ नहीं सकता कि इस शब्द का अर्थ क्या है।

"मुख्य साधन संग सत का, और शेष है गौण सब।
इससे सूझेगी परम गति, सद गति की चाल सब।

असली जो साधन है वह सुरत शब्द का है। केवल सतसंग करके इस भेद को समझ लो। यही गुरु की असली और सच्ची सेवा है।"

जिसने पाया पाया सतसंग, से भक्ति ज्ञान गम।

बस जिसने पाया उसने सतसंग के बचनों को सुनकर समझा। तब उसे ये प्राप्त हुआ।

'तू उतारेगा विवेक और तरकना की खाल सब'

जो आदमी सतसंग में जाता है वह हर बात को खाल उतार देता है, जिसको सतसंग मिल जाता है वह हरेक बात को समझ जाता है कि यह ऐसे नहीं ऐसे है। मगर आजकल जो हमें सतसंग देने वाले गुरु हैं वे तो यह सच्ची बात नहीं बताते कि कोई गुरु किसी के अन्दर नहीं आता।

यह तुम्हारा अपना ही मन और माया है। वह तो यह कहते हैं कि हर महीने आते रहो पैसे देते रहो और केन्द्र बना दो अफसोस इन ऐसे दिखावे के महात्माओं ने अपने मान, इज्जत और अपनी दौलत के लिए हम गृहस्थियों के साथ सच्चाई का व्यवहार नहीं किया और हिन्दोस्तान मर गया। इसी तरह मजहब बन बन कर सब सत्यनाश हो गया। कोई मुसलमान, कोई सिक्ख, कोई ईसाई बन गया।

"कुछ दिनों सतसंग हो, कुछ दिन नाम,
कुछ दिन मुक्त गति।

इसके पीछें पद है, सतका,

सत की रीति पाल सब।

असली चीज़ केवल सतसंग है। कुछ दिन सतसंग करके इन्सान बात को समझ कर कि असलियत क्या है फिर जब समझ आ जाये फिर मन को ठहराने व काबू करने की कोशिश करे। जब मन काबू में आ जाये तो सुख मिलेगा। ज्ञान ग्रहण करके, बात को समझकर मन को कन्ट्रोल करने से जो इस दुनियां में सुख उठाओगे वही मुक्तिपद है। इस मुक्ति का अर्थ है किसी चीज़ में न फँसना अर्थात जो किसी चीज़ के साथ न फंसा हुआ हो, उसकी लगाव किसी से न हो। जो गुरु के साथ फंसा हुआ है वह कैसे मुक्त हुआ। जो सारी जिन्दगी फकीरचन्द को ही प्यार करता रहेगा या किसी और गुरु को या ईश्वर को ही याद करता रहेगा वह मुक्त कैसे हुआ? जिसको सतपद या ईश्वर मिल गया वह दूसरे की गुलामी क्यों करेगा? वह गुरु 2 राम-राम या भक्ति क्यों करेगा। यह तो वहां पहुंचने के तरीके हैं। तो वह कौनसी चीज़ है जिसके साथ लगाव हो? वह मेरी अपनी जात व मेरा

अपना ही आप है। अपना ही आपा जो मेरा है जो असली 'मैं' है अपने आपको उसके साथ लगाना है। अर्थात अपने आपको अपने साथ लगाना है। इसके बाद फिर न किसी गुरु को पूजना है न कुछ और करना है। हां! जब तक दुनियां की होश है तब तक एहसान बाकी रह जाता है। बस एहसान आदमी नहीं छोड़ता। जिस दुनियां में तुम रहते हो उस दुनियां के कानून को तुम अगर तोड़ोगे तो तुम बाग़ी कहलाओगे। पिता पिता है भाई भाई है, बहिन बहिन है, औरत औरत व लड़की लड़की है। अगर तुम दुनियां में इस नियम को तोड़ोगे तो सजा पाओगे।

यह सारा खेल है :—

अर्थ धर्म और काम मुक्ति है कुंजी सत का संग,
राधास्वामी सँग करके काट अब जँजाल सब।

वह क्यों? मैं आपको कहा करता हूं जो कुछ है तुम्हारे ख्याल में है। ख्याल में शक्ति है। मैं सदा कहा करता हूं जिस घर में झगड़ा रहेगा पत्नी और पति की नहीं बनती कोई न कोई मुसीबत और दुःख

आयेगा। जिस घर में कलह है, अन्तर और है बाहिर और है वहां कभी सुख नहीं। आज नहीं तो कल कल नहीं तो परसों इस कलह से कोई न कोई मुसीबत जरूर आयेगी, चाहे मैं हूं चाहे तुम हो। आज यह शब्द निकला था तो दिल में ख्याल आया कि इस शब्द को पढ़ करके दुनियां गुरुओं के पास बेबकूफ बनकर जायेगी। वह बस मत्था टेकेंगे बात समझेंगे नहीं, तो गुरु की संगत क्यों की जाती है? सतसंग से बिवेक पैदा होता है।

विन सतसंग विवेक न होई, राम कृपा विन सुलभ न सोई

ऐसे शब्द को पढ़कर मैं पालग हुआ था दाता दयाल मुझे कहा करते थे, "कर सतसंग विवेक के साथ" मगर मुझे विवेक न था। परमार्थ चाहते हो तो अपने आप में अन्तर ठहरो। गुरु कहीं बाहिर नहीं रहता, गुरुज्ञान का नाम है, अनुभव का नाम है। यह किसी कामिल पुरुष के सतसंग के वचनों को सुनकर, समझकर अनुभव करके तब छुटकारा होता है। केवल किसी गुरु के आगे मत्थे टेकने से अगर कोई चाहे कि उसका

संसार से बेड़ा पार हो जाये तो यह नहीं हो सकता। बात को समझो। किसी साधु महात्मा ने कुछ नहीं देना सिवाय प्रेम, ज्ञान विवेक और भेद के तुम्हारा अपना विश्वास व अपनी ही श्रद्धा है। तुम्हारा अपना ही यकीन है। जो तुम्हें मिलना है वह तुम्हारा कर्म है यह बात मेरी समझ में आई है।

राधास्वामी

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मंदिर होशियारपुर ।

२०-५-१९७९

गुरु का रूप

आपको मैं सदा बताता रहता हूं कि मैं यह काम क्यों करता हूं। मैं एक दृश्य द्वारा दाता दयाल महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज के चरणों में गया था, उन्होंने मुझे यह सन्तमत या राधास्वामी- दिया था। कबीर और राधास्वामीमत णियों में सिवाय सन्तमत के सबका खण्डन होंने लिखा था कि दत्तात्रेय, वशिष्ट प

मुसलमान और जैन भी नहीं पहुंचे। इन सन्तों ने इस संसार के पैदा करने वाले को ज़ालिम और काल कहा हैं और राम और कृष्ण को भी काल का अवतार कहा है, एक हिन्दू ब्राह्मण जो राम कृष्ण देवी देवताओं को मानने वाला हो, उसे अगर यह कहा जाये कि ये सब ग़लत हैं।

इन्हीं भरोसे तुम मत रहियो,
इन नहीं मुक्ति पाई।

तो उसे कितना बुरा लगेगा। मेरे दिल को दुःख लगा करता था। लेकिन क्योंकि मैं एक दृश्य द्वारा गया था, मुझे बिश्वास आ गया था इसलिए मैंने दातादयाल को नहीं छोड़ा। मगर मुझे भेद का पता नहीं लगता था। उस समय मैंने प्रण किया था कि जो मेरा अनुभव होगा वह बता जाऊंगा। मैं देखना चाहता था कि इस सन्तमत का राम या मालिक कहाँ रहता है जो उन्होंने सबका खण्डन किया है।

दातादयाल से मैंने बहुत प्रेम किया है जिस प्रकार बच्चा छोटी आयु में मां से प्रेम करता है।

मैं प्रेम से रोकर उन्हें तंग किया करता था और यह कहा करता था कि मुझे यह भेद बताओ जिससे कि आप लोगों ने सन्तमत को सबसे बड़ा कहा है और बाकी सबको छोटा बताया। उस समय 1918 में उन्होंने मुझे यह काम दिया था और कहा था कि तुझे सत्गुरु, भेद देने वाला सत्संगियों के रूप में मिलेगा। दो दिन पहले मुझे एक पत्र आया जिसे सुनो :—

परम पूज्य पिता जी एवं गुरु जी, राधास्वामी,
सादर चरणस्पर्श।

पिता जी, आपकी बीमारी के दो पत्र प्राप्त होने पर मेरा मन बहुत विचलित हुआ। मैं काफी रोई और अब निश्चित रूप से 5 या 7 जून को यहाँ से आपके पास आने के लिये रवाना हो जाऊंगी। मैं B. Ed. में Theory Practical में Second Division पास हो गई। Practical में only four No. से First Division रुक गई 100/87 No. देने वाले Examinor ने चार नम्बर कम देकर First Division से वंचित कर दिया। पिता जी, मैं अति शीघ्र आपके पास क्यों आने को परेशान हू।

यह वो आप जानते हैं कि दुनियां की ठोकर मुझे आपके चरणों में ले गई। दूसरा रहस्य जो अचानक जीवन में घटित हुआ वह इस प्रकार है। 6 या 7 को आपकी बीमारी का समाचार पत्र प्राप्त होने पर मैं दिन को आपको याद कर काफी रोयी। दूसरे दिन सुबह 6 O clock पूजा करने के बाद कई घंटे आपके लिए रोई, लेकिन मेरे आंसुओं पर भाग्य को तरस न आया और आपके दर्शन की लालसा मन में ज्यों की त्यों ही बनी रही। तिथि 8 को mid night वह दृश्य मैं ने पूर्ण रूप से जाग्रत अवस्था में देखा परन्तु दृश्य आने के समय अर्ध चेतन अवस्था सी हो गई। मैंने देखा कि एक ऊंची सी पहाड़ी है। वहाँ पर आप काली चादरी व स्फेद कुर्ता पहने हैं। आपकी दाढ़ी बिलकुल सफेद है। रंग गोरा होते हुए भी कुछ सांवला सा है। मैं और मेरी चाची लेटे हैं। आप मुझे touch कर Blessing देने आये किन्तु मुझें पहचान न सके और आपने अपना वरद हस्त चाची के सिर पर रख दिया। मेरे मन में कोई प्रतिकूल भावना इस दृश्य द्वारा नहीं आई मैंने सोचा चाची को नामदान मिला है। वो काफी

दिनों से आपको मानती है इसलिए आप उन्हें पहले आशीर्वाद देंगे लेकिन जब मैंने उठकर आपके चरण पकड़ लिये और रोने लगी तो आप पश्चाताप में डूब गये। मुझे करुणा स्वर में बोले जिसे देने आया था उसे कुछ न दे सका और सब कुछ तुम्हारी चाची को दे दिया। मैं कुछ बोली नहीं आपके पैर पकड़ें रोती रही। आपनें कहा तुम्हारी होशियारपुर आने की दृढ़ प्रतिज्ञा देखकर मैं तुझे दर्शन देने होशियारपुर से यहां आया हूं और तेरे पास तीन दिन रहूँगा। मैं लगातार आपके पैर पकड़ें रोती रही और आपके साथ चलने को ज़िद करती रही। इसके बाद आपने ऊपर से लाल और भीतरी भाग में नीला मखमली डिब्बा खोला जिससे एक भयंकर नाग फनफनाने लगा। आपने नाग से कहा कि इस बेटी को आशीर्वाद दे, मैं इसे पूर्ण सुखी देखना चाहता हूं और नाग ने मेरी ओर उन्मुख होकर ऐसी फुंकार भरी जिससे उसके मुंह से लाईट निकल कर मुझपर फोकस हो गई और आपने मुझ से अपने पैर छुड़ाते हुए कहा, जा तू सर्व सुखी होगी और एक फूंक मुझ पर मारी जिससे आपके मुंह से प्रकाश निकल

कर मेरे पर फोकस हुआ और आप हर इच्छा पूर्ण होने का आशीर्वाद देकर चलने लगे तो मैंने आपके पैर पकड़ लिए कि मेंने आप से कुछ नहीं माँगा, अब कुछ मांगती हूं। आपने कहा मांगो। मैंने कहा कि मुझे दुनियां से दूर अपने साथ पंजाब ले चलो। आपने समझाया कि तुम्हारी age youngness है और मैं तुम्हें ले चलने में असमर्थ हूं। मैंने जिद की तो आप तैयार हो गये। आपने कहा किराये में रुपये 100 लगेंगे। मैं तैयार हो गई और जब रु: देखे तो मेरे पास कुल रु: 50 ही थे। मैं निराश हुई तब आपने समझाया कि मैं कानपुर होता हुआ जाऊँगा तुम कानपुर में मुझ से मिलकर मेरे साथ चलना। फिर दृश्य बदल गया, आप लाल फर्श पर बिस्तर पर लेटे हैं और ऊपर पंखा चल रहा है और मैं आपके चरण दबाते हुए रो रही हूं कि अपनी illness बीमारी अवस्था में मुझे सेवा करने के लिये क्यों नहीं बुलाया। मैं कल रात कानपुर से वापिस आई हूं और एक vacancy के लिए Apply कर दिया है। अब दुनियां का कर्म कर चुकी मैं समय का इन्तजार नहीं कर सकती और निश्चित (definite) रूप से आने को तैयार हूं। दुनियाँ के

कर्म करने पड़ते हैं क्योंकि मेरा कोई नहीं है। पिता जी, मैं पहले (God Shiv) भगवान शिव की परम भक्त थी। तथा मेरे अभागेपन का परिणाम किसी का क्रोध है। समझ में नहीं आता यह दृश्य क्यों आया क्या कारण है। अपनी कुशलता का समाचार मुझे पिता जी, अति शीघ्र देने का कष्ट करें बाकी आपकी याद में अब मन बहुत व्याकुल है। मुझे आपका पत्र मिलता रहता है तो व्याकुल मन को तसल्ली होती है। शेष आपको राधास्वामी व चरण स्पर्श।

आपकी अभागिन बेटी
मधू

मैं शपथपूर्वक कहता हूँ कि मैं उस लड़की को नहीं जानता न मैं उसके अन्तर गया। ये जो कुछ बातें वह लिखती है कि मैंने यह कहा और वह कहा, वह मैं नहीं था। कौन था? उसका अपना ही आत्मा था। जिस प्रकार का संस्कार उसने लिया हुआ था वह था।

मैंने यह काम क्यों किया? दुनियां गुरुभक्ति

यह समझती है कि गुरु का ध्यान करते रहो। इस समय संसार में जितना यह गुरुमत फैला हुआ है, मैं इसे गुरुमत नहीं कहता, मैं इसको मनमत कहता हूं। क्योंकि इस लड़की के अपने ही मन ने सारा खेल खिलाया। कोई गुरु, राम या कृष्ण बाहर से नहीं आता, जो कुछ है तुम्हारे मन के अन्तर है।

मैंने यह काम क्यों किया ? केवल अपने जैसे मूर्ख गृहस्थियों को समझाने के लिए कि तुम लोग इन बातों में आकर मूर्ख बन गये और तुमको लूटा गया है। मेरे कहने का भाव यह है कि जबसे मुझे यह समझ में आया कि मैं तो कहीं नहीं जाता, जो आदमी ऐसे पत्र लिखते हैं उनमें से कई आदमियों को मैं जानता हूं और कईयों को नहीं जानता। क्योंकि दाता दयाल ने कहा था कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना इस लिये जो मेरे साथ बीती उसके आधार पर शिक्षा को बदल रहा हूं कि तुम्हारे अन्तर में ये जितने झगड़े होते हैं ये सब संस्कार और अधिकार हैं। अब यही बात किस. और गुरु के साथ होती (अब तो ये गुरु कुछ सम्भल

गये हैं) तो ये उस लड़की के आगे लाउड स्पीकर कर देते और कहते, सनो भाई। यह क्या कहती है। उसे सुनकर दुनियां कहती ओहो। बाबा फकीर बड़ा करनी वाला है। लोगों के अन्तर प्रकट होता है बस, उसके हो जाते और धन मान उसे दे देते।

मैं जब अपने आपको समय का सन्त सत्गुर, कहता हूं तो मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं, तू मूर्ख तो नहीं ? अहंकारी तो नहीं ? नहीं। मैं हतैषी हूं। किसका ? जो सच्चाई के इच्छुक हैं या जो अज्ञान में लुटे जा रहे हैं। दूसरे महात्मा कसम से कहें कि उनके साथ भी इसी प्रकार बीतती है या कि नहीं ? मेरे सामने ये गुरु और महात्मा मानते हैं कि जो कुछ आप कहते हैं यह ठीक है।

मैं यह जो काम करता हूं इसमें मेरा कोई निजी स्वार्थ नहीं। केवल गुरु की आज्ञा है और अपना कर्मभोग है। सच्चाई इस लिए वर्णन करता हूं कि युधिष्ठर ने सारा जीवन सच्च बोला। एक पालीसी की "असवस्थामा हतः न जानाति नरो वा कुंजरः" महाभारत कहती है कि उसे अढ़ाई घड़ी का

नर्क भोगना पड़ा। अगर मैं गुरु बनकर झूठ बोलूँ और जो सच्चाई मैंने समझी है तुम लोगों को न बताऊं तो मेरी क्या दशा होगी और कितने वर्ष नर्क में रहूंगा, अगर कोइ नर्क और स्वर्ग है तो सोचो ! फिर जितनी धार्मिक किताबें हैं जिन में रोचकपना है, यथार्थ नहीं हैं। उस समय के लोगों की मानसिक (Mental) दशा को देखकर रोचकपना या भयानकपना आवश्यक था। अब ज़माना बदल गया। यह बात देखकर मैं पुरानी किताबों में लिखी हुई शिक्षा को यथार्थ रूप में वर्णन करता हूं और हित से सच्चाई प्रकट करता हूं। इन धर्मों, गुरुओं और पंथों ने पब्लिक को बॉट दिया है और अपने स्वाद और लाभ के लिए ऐसी ऐसी बातें कही हैं जिसका कोई हिसाब नहीं। धर्मों की ग़लत समझ के चक्कर में आकर ही आपस में धार्मिक झगड़े और लड़ाईयाँ होती हैं क्योंकि संसार को समझ व ज्ञान नहीं कि हकीकत क्या है। मैं चाहता हूं कि अगर मैं ग़लत हूं तो दूसरे मेरा खण्डन कर दें। मैं कोई दांवा तो नहीं करता, मेरा अनुभव है।

तुम लोग आकर मेरी मुट्ठी चापी करते हो।

किसी गुरु की मुठ्ठी चापी करने से तुम्हारा उद्धार नहीं होगा। यह सँसार का व्यवहार है। बड़ों की सेवा करना मानवता का एक अँग है। मैं आपको कहना चाहता हूं कि गुरु की सेवा केवल उसका ध्यान करना नहीं है। क्यों ? हज़ारों आदमी मेरा ध्यान करते हैं। उनके अपने विश्वास के अनुसार उनके काम होते हैं और मेरे बाप को पता नहीं कि कौन मेरा ध्यान करता है। आप लोग यह आशा करते हैं कि गुरु तुम्हें बेटा, धन देगा, यह झूठ है। तुम्हारा विश्वास काम करेगा। इसके अतिरिक्त तुम बाहर में किसी पर विश्वास करो, उस मालिक या गुरु को सदा अपने अन्तर समझा करो, और वहां मांगा करो। गुरु की असली सेवा गुरु की बात को समझ कर मंज़ल पर पहुंच जाना है।

वह जो रूप तुम्हारे अन्तर प्रकट होता है अगर तुम्हारा यह विश्वास है कि यह रूप पूर्ण है तो आपका काम हो जायेगा। अगर तुम उस मूर्ति को जो पैदा होती है बाबा फकीर जो मस्त राम का लड़का है और होशियारपुर में रहता है, समझते हो

तो आपको परमार्थ का कोई लाभ नहीं होगा। यह एक नई चीज़ है जो मैं आपको बताना चाहता हूं। हां। ध्यान करने से तुम्हारी (will power) बढ़ जायेगी। क्योंकि तुम्हारे विचार में शक्ति है तुम्हें लाभ पहुंच जायेगा। अब मुझपर गुरु बनने का कोई पाप नहीं है।

अगर कोई गुरु है तो ज्ञान और समझ का नाम है। किसी निर्बन्ध पुरुष की संगत में जाकर उसके बचनों को सुनना और समझना ही गुरुभक्ति है। जो आदमी इस समय बैठे हुए हैं अगर मेरी बात को ध्यान से सुन रहे हैं और उसे अपने अन्दर विचारेंगे, तब सच्ची समय आजायेगी। उसका नाम गुरुभक्ति है। बाहर का जो गुरु है, उसे रुपया देना ही गुरुभक्ति नहीं है। देना लेना कर्मों का लेखा है। अगर रुपया देने से ही मोक्ष मिलती तो ये बड़े बड़े धनी लोग रुपया देकर प्राप्त कर लेते। अगर मेरे भाव को समझ जाओगे तो तुम्हारा जीवन बन जायेगा। आदमी बिना सोचेसमझे भक्ति करता है। अब जिस लड़की ने पत्र लिखा है वह मेरे जाल में फँसी

कि नहीं फँसी । क्योंकि मैं उसके अन्तर कट हुआ और बातें की, यह कहा वह कहा, अब अगर मैं उस लड़की के घर का पानी भी पिऊँ तो मैं दोषी हूं। क्योंकि वह मुझे अज्ञान से पूजती है। सच्ची बात नहीं कहता तो मैं पापी हूं।

वह भजन क्या है जिससे हमने पार जाना ? लोगों ने यही समझा हुआ है कि कानों में उँगलियां डालकर आध घन्टा पन्दरह: मिन्ट ध्यान करो और शब्द सुनो, बस यही काफी है। तुम लाख शब्द सुनो। शब्द सुनने वाले महापुरुषों की क्या दशा हुई। बड़े बड़े महात्मा, इसामसीह या दूसरे जो गुरु कहला गये, उनके साथ क्या बीती। केवल शब्दयोग या ध्यानयोग ने तुम्हें दुखों से नहीं बचाना। जो कर्म किये हुये हैं वे भुगतोगे। इस वास्ते स्वामी जी ने कहा है।

ज्ञानी ध्यानी इन सब चक्कर खाया।

अर्थात ये ध्यान करने वाले भी मंजिल पर नहीं पहुंचे। कैसे पहुंचेंगे ? वे तो अपने मन से ही

ध्यान करते हैं। जब तक आदमी इस मन से ऊपर नहीं जायेगा उसका आवागवन नहीं छूट सकता। यह असम्भव है।

यही कबीर साहिब ने कहा है कि भजन भेद न्यारा है :

साधो भजन भेद है न्यारा,
का माला मुद्रा के पहिरे, चंदन घसे लिलारा।
मूंड मुंडाय सिर जटा रखाये, अंग लगाये छारा।

का पानी पाहन के पूजे, कंदमूल फलहारा,
कहा नेम तीरथ व्रत कीन्हे, जो नहिं तत्व विचारा।

यह भजन है। तत्व का विचार करना कि मैं कौन हूँ, दुनियां क्या है, कैसे बनती है, इस बात का ज्ञान प्राप्त करके इस दुनियाँ के चक्कर में आकर अपने आपको मत फँसायो।, इतनी ही बात हैं और कुछ नहीं। किसी स्थूल पदार्थ से तुम्हारा मोह (Attachment) न हो ताकि अन्त समय में कोई स्थूल पदार्थ याद न आवे।

का गाये का पढ़ि दिखलाय

का भरमे संसारा।
का संध्या तरपन के कीन्हे,
का षटकर्म अचारा।
जैसे बधिक ओट टाटी के,
हाथ लिये विखचारा।

कबीर साहिब कहते हैं कि जिस प्रकार कसाई एक बकरे को लेकर उसे खूब खिलाता पिलाता है ताकि मोटा हो जाये तो मांस की बिकरी अधिक हो जाये। काल यही वर्ताव यहाँ जीवों के साथ करता है।

ज्यों बक ध्यान धरै घट भीतर,
अपने अंग निकारा;

वह कहते हैं कि जिस प्रकार बगुला होता है उसकी नीयत तो मछली पकड़ने की होती है मगर भक्तों की तरह खड़ा रहता है। इसी प्रकार जो हमलोग भक्त कहलाते हैं, हमारी नीयत कुछ और होती है और दुनियां को दिखाने के लिए हम और करते हैं। मेरे पास हीरा सिंह एक सत्संगी आया करता था। उसकी ज़मीन गवालियर में है। उसने

किसी निहंग की बारह: साल सेवा की, वह कहता है, मैं सारी सारी रात खड़ा रहता था। बारह साल के बाद वह निहंग साधु बीमार हुआ तो वह कुएं पर चला जाता, जंजीर खड़काता और भजन गाता। नहाता नहीं था, तो हीरा सिंह वहां पर गया। इसने कहा महाराज! आप नहाते नहीं हैं फिर किस लिये वहां जाते हैं। क्या डराने के लिये जाते हैं? उसने कहा—भई! अगर मैं ऐसा न करूँ तो मुझे साधु कौन समझेगा, पैसा कहां से आयेगा। आजकल का गुरुवाद, रुपीवाद है। आर. ऐस. राधास्वामी लिखते हैं तो आर. ऐस. रुपया भी होता है। पैसा देने वाले अमीर आदमियों को आगे बैठाया जाता है और जो बेचारे गरीब हैं, पहूंच नहीं सकते उनकी कोई सुनवाई नहीं है। दस दस बीस बीस साल नाम लिए हुए हो गये, इतना अवसर नहीं मिला कि गुरु के पास बैठकर अपना दुखड़ा रो लें। दुनियां फिर भी पागल है :—

दै परचे स्वामी हवै बैठें,
करें विषय ब्योहारा।

जिस प्रकार उसके अन्तर परिचय आया।

अब अगर यह सच्चाई नहीं कहता, आप मुझसे सुनेंगे, पत्र को पढ़ेंगे, आप मुझे गुरु मानेंगे या नहीं मानेंगे ? कबीर साहिब कहते हैं ऐसे परिचय मिल जाने से स्वामी होकर बैठ जाते हैं अर्थात गुरु बनकर काम करते हैं। मैं आपको सच्च कहता हूं, जब से मुझे आप लोगों से यह ज्ञान हुआ तो मैं इन पंथों और धर्मों को दूर से ही सलाम करता हूं। इतना धोखा फरेब और चार-सौ-बीस हम गृहस्थियों के साथ की गई है। यह आजकल का गुरुवाद है। मैं स्वयं लुट गया था। मैंने जो बारह साल कमाया वह गुरु के दरबार में भेजा। वह पवित्र विभूति थे। उन्होंने एक बार प्रशाद में अढ़ाई हज़ार रुपया वापिस किया और तीन हज़ार दूसरी बार वापिस किया। बीस हज़ार रुपये पच्चीस साल के बाद मेरी स्त्री को दे गये। मुझे तो ऐसा गुरु मिला था जिसने हमारे भ्रम भी दूर कर दिये और हमारी दुनियां भी बना दी। मगर मेरा यह स्वभाव था कि मैं आज्ञा मानता था। जो कह दिया वो ठीक है, चाहे लाभ हो या हानि हो मैं उसकी परवाह नहीं करता था।

जब मैं कहता हूं कि मैं अवतार लेकर आया हूं

तो मेरा दिल मुझे लानत नहीं देता। क्योंकि मैं सच्चाई वर्णन करता हूं, वह भी अपनी नीयत अनुसार। सिर पर कर्तव्य है वह पूरा करता हूं और जो मेरी समझ में आया है मैं तो वह बताऊंगा। मैं किसी के प्लेटफार्म पर सत्संग नहीं कराता।

ज्ञान ध्यान को मरम न जानै,
बाद करें निःकारा।
फूंके कान कुमति अपने से,
बोझ लियो सिर भारा।

इसी वास्ते मैंने किसी को चेला नहीं बनाया। जो समझ में आया बता दिया। ज़ाहरा गुरु नहीं बना। कुमति ग़लतमत को कहते हैं। ये जो स्वामी व गुरु बने हुए हैं और लोगों के कानों में फूंक मारकर मन्त्र देते हैं, यह सिर पर बोझ ले लेना है। जितने गुरु अनाधिकारियों को नाम देते हैं ये अपने सिर पर बोझ लेते हैं, क्योंकि यह धोखा है :—

बिन सतगुरु गुरु केतिक वहिगे,
लोभ लहर की धारा।

सत्गुरु सच्चे ज्ञान को कहते हैं। कबीर

साहिब कहते हैं जो गुरुलोग बिना सच्चे ज्ञान के नाम देते फिरते हैं, वे बह गये। किसमें ? उन्होंने लालच,, मोह, डेरा, धाम और मंदिर के लिए हेराफेरी की।

गहिर गँभीर पार नहिं पावै,
खंड अखंड से न्यारा।

वह तो ब्रह्मन्ड से परे है :

दृष्टि अपार चलब को सहजै,
कटें भरम कै जारा ।

वह कहते हैं, दृष्टि को ऊंचा करके देखो ताकि तुम्हारे भ्रम चले जायें ।

निर्मल दृष्टि आत्मा जा की,
साहिब नाम अधारा।

जिसकी बुद्धि निर्मल हो गई है अर्थात बुद्धि साफ हो गई है उसके लिए नाम है। इस वास्ते मैंने 'इन्सान बनो' की आवाज़ उठाई है। पहले इन्सान बनो, फिर तुम्हें ज्ञान होगा वरना नहीं होगा :

कहे कबीर तेही जन आवै,
मैं तैं तजै विकारा।

वह कहते हैं, केवल वही आदमी पार होगा जो 'मैं' 'तूं' को छोड़ देता है। एक आदमी गुरु को अलग समझता है और अपने को और समझता है, वह कभी पार नहीं होगा। गुरु तुम्हारी जात है, तुम्हारा अपना निज रूप है।

दाता दयाल का शब्द है :—

गुरु, रूप न समझे कोई,
भरम में पड़े अज्ञानी।
गुरु को मानुष जानकर,
भक्ति का करें व्योहारा।
सो प्राणी अति मूढ़ हैं,
कैसे जायें भव पारा।
देह के बने अभिमानी॥

जो आदमी यह समझता है कि मेरा गुरु, अमुक है इन सन्तों की बाणियों के अनुसार और मेरे क्रियात्मिक जीवन (Practical Life) के अनुभव

अनुसार उसका बेड़ा पार नहीं हो सकता। ऋद्धि सिद्धि मिल सकती है। इसमें कोई शक नहीं क्योंकि वे गुरु को फकीरचन्द या कोई और मानते हैं।

गुरु को मानुष जानकर, शीत प्रसादी लें।
सो तो पशु समान हैं, संशय में अटके।
गुरु तत्व न जानी ।। भरम में।
गुरु को मानुष जानकर, मानुष करो विचार।
सो नर मूढ़ गंवार हैं, भूल रहे संसार।
मोह के फांस फंसानी ।। भरम में।
गुरु को मानुष जानकर, भेड़ की चलते चाल।
वह बन्धन को क्यों तजें, व्यापे माया काल।
पड़े योनि की खानी ।। भरम में।
गुरु नाम आदर्श का, गुरु है मन का इष्ट।
इष्ट आदर्श को न लखे, समझो उसे कनिष्ट।
बात बूझे मन मानी ।। भरम में।
गुरु भाव घट में रहे अघट सुघट की खान।
जिसे समझ ऐसी नहीं, वह है मूढ समान।
नहीं गुरु रूप पिछानी ।। भरम में।
चेला तो चित में रहे, गुरु चित के आकास।
अपने में दोनों लखे, वही गुरु का दास।
रहे गुरुपद घट ठानी ।। भरम में।

अपने में दोनों लखे वह गुरु का दास है। जो

यह समझता है कि गुरु होशियारपुर रहता है वह गुरु का दास नहीं।

सुरत शिष्य गुरु शब्द है,
शब्द गुरु का रूप।
शब्द गुरु की परख बिन,
डूबे भरम के कूप।
नर जनम गंवानी ।। भरम में।
गुर ज्ञान का तत्व है,
गुरु ज्ञान का सार।
गुरु मत गुरु गम लखे,
फिर नहीं भव भय भार।
कमल जैसी गति प्रानी ।। भरम में।
राधास्वामी सतगुर सन्त ने,
कही बात समझाय।
जो नही माने बचन को,
उरझ उरझ उरझाय।
कौन समझे यह बानी ।। भरम में:

गुरु को सदा अपने पास समझो।

Be true to him and sunender to him my form.

उसे किसी रूप में मानलो और उसे पूर्ण समझो। जितना तुम्हारा मन साफ होगा उतनी कमाई होगी। तुम उसके हो जाओ वह तुम्हारा हो जायेगा।

यही बात मुझे दाता ने बगदाद में लिखी थी कि फकीर! गुरु बाहर नहीं है, तेरे अन्तर है। मेरी अपनी ही आत्मा गुरु और अपनी ही आत्मा चेला है। मैं तुम्हें धोखा नहीं देता। यह समझ मुझे तुम लोगों ने दी। इस लिए मैं इस आयु में आप लोगों को अपना गुरु मानता हूं। क्योंकि यह ज्ञान तो मुझे दाता दयाल ने दिया था मगर मेरी खोपड़ी में नहीं बैठता था। यह लड़की जिसने पत्र लिखा है मैं उसको गुरु मानना हूं। दाता लिखा करते थे।

गुरु तो तेरे पास फकीरा, गुरु तो तेरे पास।

मैंने सच्चाई वर्णन करदी। शेष जो कुछ है तुम्हारे हाथ है। अपने दिल को साफ करो। सच्चे [illegible]तो। गुरु तुम्हारे दिल में रहता है।

सब को राधास्वामी

राधास्वामी

हृदय की ज्वाला

लेखक : कुवेर जी नाथ श्रीवास्तव

नज़म

१. और सब बातें तेरी एक, दिल की बहजाने की है।
उसके नजरों में अदा की, तेरे चुभ जाने की है ॥

२. वह नहीं भूखा है तेरे, नेम जप तप वर्त का।
वह है अशिक बस तेरे, एक सच्चे दिल के दर्द का ॥

३. हो अगर सच्चे तो समझो, यार तेरा यार है।
वर्ना करना धरना कहना, सुनना, सब बेकार है ॥

४. बन के सच्चे दिल में ढूंढो, तुम उसको पा जाओगे।
हो अगर खोटे तो समझो सबमें धोखा खाओगे ॥

५. यार का तुमको पता है? अक्ल से बाहर है वह।
जब तलक हो अक्ल में तुम, लापता तुमसे है वह ॥
"कुवेर" यार को जो दिल में देखो, समझा वह
येगाना है।

यार को बाहर जो ढूंढा, समझा वह बेगाना है ॥

क्या तुमने कभी इस बात पर विचार किया है। प्रकृति ने तुमको इस नाशवान संसार में मनुष्य के भेष में क्यों भेजा है? जब तुम्हारे हृदय में किसी वस्तु की प्राप्ति की अभिलाषा तीव्र होकर ज्वाला का रूप धारण कर लेती है तब तुम अपना घर वैसे ही छोड़ने पर विवश हो जाते हो जैसे भाप तीव्र हो जाने पर इंजन को स्टेशन छोड़ने को विवश कर देती है। तुम उस वस्तु के प्राप्ति के हेतु अपनी सारी शक्ति लगा देते हो अगर वह वस्तु तुमको प्राप्त हो गई वो उसको लेकर हर्ष पूवर्क घर लौट आते हो, मगर कम शक्ति के कारण तुम उसको प्राप्त नहीं कर सके तो भी एकाग्रचित होकर शक्ति प्राप्त करने हेतु घर ही लौट आते हो और इच्छित वस्तु के प्राप्ति में लग जाते हो। तुम इस कार्य के करने के विवश हो जब तक वह वस्तु तुम को प्राप्त न हो जावे।

इससे यह परिणाम निकलता है कि तुम इस संसार में अपना निज द्वार छोड़ कर किसी वस्तु के प्राप्ति के हेतु आये हो और जब तक वह वस्तु तुम प्राप्त नहीं कर लोगे तुम इस संसार में आवागमन

के चक्कर में फंसे रहोगे। अब बताओ तुम किस वस्तु की प्राप्ति हेतु इस संसार में आये हो? अगर नहीं बता सकते तो सुनो! तुम इस संसार में हृदय की ज्वाला बुझाने आये हो और जब तक यह ज्वाला बुझ नहीं जायेगी तुम आते जाते रहोगे। ज्वाला से हमारा अभिप्राय उस अशान्ति से है जो तुमको देह, मन, वो आत्मा के वासनाओं से उत्पन्न होती है। जिसको तुम द्वन्द कहते हो, जिसमें तुम मोहित रहते हो और आवागमन से छुटकारा नहीं पाते, ज्वाला के बुझ जाने से हमारा अभिप्राय वासनाओं से छुटकारा पाकर शांति प्राप्त कर आवागमन से रहित हो जाना, यानी स्वयं का निज स्वयं में मिलकर स्वयंपने के वोधमान को भूल जाना है। निज स्वयं से हमारा अभिप्राय अकह अपार व अगाध प्रकाश के भंडार से है जो मालिके कुल का चरण है, स्वयं से हमारा अभिप्राय उस निज स्वयं प्रकाश के अंश से है जो तुममें व्यापक है।

जो वस्तु जिस भंडार की अंश होती है वह अपने भंडार में मिल कर अपने अंशपने के वोधभान को भूलकर शांति प्राप्त करती है। एक शायर

इसको निम्नांकित नज्म में वर्णन करता है :

लौ शोले की सुबे आसमां है,
पानी तहे खाक को रवां है ॥

अर्थात अग्नि का भंडार आकाश है इसी कारण उसकी लौ आकाश से मिलने के हेतु ऊपर जाती है पानी का भँडार पाताल है इसी कारण उसकी धार पाताल से मिलने के हेतु नीचे बहती है।

तुममें और प्रत्येक व्यक्ति में यह ज्वाला वासना के रूप में व्यापक है। जिसको बुझाने के हेतु प्रकृति ने इस संसार में तुमको भेजा है, मगर तुम यहाँ आकर वासना के द्वन्द में लम्पट हो गये और अपने आदर्श को भूल गये। परम सन्त कबीर साहब कहते हैं :

चाह चमारी, चुहड़ी सब नीचों की नीच ।
तू तो आप ही ब्रह्म था, जो चाह न होती बीच ॥

एक शायर कहता है :

हजारों ख्वाहिशें ऐसी कि हर ख्वाहिश पर दम निकले
बहुत निकले मेरे अर्मां, लेकिन फिर भी कम निकले

मगर मैं इसको इस प्रकार कहता हूं :—

हजारों ख्वाहिशें ऐसी की हर ख्वाहिश पर दम निकले,
बहुत पूरे हुए अरमा, मगर कुछ भी नहीं निकले ॥

इस संसार में जन्म लेने के बाद जब तुमने होश सम्हाला तुममें वासनाओं की फुरना हुई तुम्हारे सर पर इनकी पूर्ति का बोझ पड़ा तुम्हारी बहुत सी वासनायें पूरी हुई मगर उसकी जगह पर दूसरी पर दूसरी वासनायें उत्पन्न होती गईं। तुम्हारी चिन्ताओं का बोझ ज्यों का त्यों बना रहा वह कुछ भी हल्का नहीं हुआ। पता नहीं कितने सहस्त्रों वर्षों से इस संसार की कुल नदियां दिन रात लगातार बहकर समुद्र को भरने का प्रयास कर रही हैं मगर समुद्र का जल राई के बराबर भी नहीं बढा।

पता नहीं कितने सहस्त्र वर्षों से समुद्र का जल भाप बनकर मानसून के रूप में बादल बनकर इस संसार को सींचकर हरा भरा बनाये हुये है मगर समुद्र का जल तिल भर भी नहीं घटा।

पता नहीं इस संसार में कितने प्रतिदिन जन्म

लेते हैं और कितने मर जाते हैं मगर संसार की शोभा न तो जन्म लेने वाले कुछ बढ़ा ते हैं न मरने वाले कुछ घटा देते हैं। इसकी शोभा ज्यों की त्यों बनी रहती है।

पता नहीं तुम कितने बार इस संसार में आये और गये कितने बार शुभ या अशुभ कार्य किए तुम्हारे शुभ या अशुभ कार्य से इस संसार का क्या बना और बिगड़ा।

नहीं मालूम प्रकृति ने बासना को किस सांचे में ढाला है कि यह सदा सुन्दर और जवान बनी रहती है तुम इसको भोगते थक जाते हो मगर यह ज्यों कि त्यों बनी रहती है यह तो किसी सीमा तक ठीक कहा जा सकता है मगर इसमें सबसे बड़ा दोष यह है कि यह फूलती हुई दिखाई देती है मगर फल नहीं लगता इसी कारण सन्तों ने इसको से सम्बोधित किया है।

पौराणों में वासना की कथा अलंकार में इस प्रकार आई है कि महिषासुर (वासना)एक राक्षस था

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

उसने शिव भगवान (दयाल) की सेवा की उसकी सेवा से शिव भगवान प्रसन्न हुए और कहा क्या मांगता है उसने कहा हमको वर दिजिए कि मैं किसी के मारे न मरूं शिव भगवान बोले अजर अमर तो मालिक की जात है जा मैं तुमको वर देता हूं कि अगर तुम्हारा एक बूंद खून किसी के मारने से धरती पर गिरेगा तो उससे सौ महिषासुर पैदा हो जायेंगे इस वर के प्रभाव से उसने इन्द्र पर विजय प्राप्त कर लिया और ऋषि और मुनियों पर अत्याचार करने लगा, वह लोग विष्णु भगवान के यहां गये और अपना दुःख कहा उन्होंने आदि शक्ति को महिषासुर का वध करने का आदेश दिया वह महाकाली के रूप में प्रगट हुई महिषासुर को वध किया और उसका खून खप्पर में लेकर पी गई एक बूंद खून गिरने का तात्पर्य यह है कि अगर एक वासना की पूर्ति हो जाती है तो सौ वासनायें उत्तपन्न हो जाती हैं वध करने का अभिप्राय निष्काम वासना के पूर्ति के परिणाम पर हर्ष या शोक नहीं करना है निष्काम कर्म करना, खप्पर में खून पीने का भी अभिप्राय निष्काम कर्म करना है ।

वासना आग है बिना आग के तुम जीवित नहीं रह सकते इसको सतर्कता से काम पर जलाओ खाना पकाओ भूख बुझाओ इसके बाद आग खाना व भूख को भूल कर सो रहो। अगर हमारे संकेत को समझ गये तो आगे का लिखा सुगमता पूर्वक समझ सकोगे।

तुमको इस बात का ज्ञान हो या न हो मगर जो कुछ भी काम तुम जाने या अनजाने करते हो वह सीधे या टेढे रास्ते में इसी ज्वाला को बुझाने के हेतु करते हो गृहस्थ इसी के कारण सबका ग्रहण करता है वैरागी इसी के हेतु सब कुछ त्याग देता है, ज्ञानी इसी के हेतु बुद्धि फांस में फंसा है। ब्रह्मा विष्णु और महेश ज्ञानी के हेतु देह को बन्धन में आये हैं सब के सब लक्ष्य को भूलकर द्वन्द में फंस गये, द्वन्द की चरखी पर चढ कर उसके झूले में झूलने लगे। झूला कभी ऊपर जाता है कभी नीचे आता है। ऊपर जाते हैं तो प्रसन्न व सुखी होते हैं नीचे आते हैं तो अप्रसन्न व दुखी होते हैं सब लोग कोल्हू या रहट के बैल बने हुए हैं। दिन भर चलते चलते थक जाते हैं तो शाम को देखते हैं कि जहां

सुवह के वहीं पर ज्यों के त्यों हैं। प्रति दिन का उनका यही काम है। हाथ कुछ नहीं आता ढ़ाक के तीन पात बने हैं। झूलते झूलते जब झूलने वाले थक जाते हैं तो उनमें से एकाध को इस झूले से निकलने की, पानि कि, हृदय की, ज्वाला बुझाने की, चेतना आती है। वह इस फेर में पड़ जाते हैं कि वह अपनी ज्वाला बुझाये तथा दूसरों को भी इसको बुझाने में सहायता करे। कबीर साहब कहते हैं :

मैं फुका घर अपना लूका लिन्हा हाथ,
वाहू का घर फूक दूं जो चले हमारे साथ ॥

तुम कह सकते हो कि संत भी तो देहधारी होने के कारण इस झूले में झूल रहे हैं, यह बात ठीक है अन्तर यह है कि संतजन इस झूले के सुख दुख से प्रभावित न होते तो तुम संत बन जाते। सन्तजन द्वन्द के पानी में तैर कर और नहा धोकर अपनी द्वन्द की मैल धो देते हैं और तुम द्वन्द में द्वन्द की मैल को लपेट कर उसके दल दल में फँस जाते हो।

अगर तुमको इस ज्वाला का ज्ञान हो गया और इसके बुझाने के इच्छुक हो गये और मालिक की दया

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

से पूरा गुरु मिल गया तो इसके बुझाने की युक्ति तुम को मिल जायेगी, अगर इस ज्वाला का तुमको अनुभव नहीं हुआ और यह ज्वाला नहीं बुझी तो तुम आवागमन में फंसे रहोगे पता नहीं कब तक रहोगे।

तुम किसी रोग में ग्रसित हो जाते हो जब तक वह धीमा है तुम उसकी ओर आकर्षित नहीं होते और न उसको दूर करने का प्रयत्न करते हो मगर जब वह तीव्र हो जाता है तब तुम उसकी ओर आकर्षित होते हो और उसके दूर करने का प्रयत्न करते हो। अगर रोग के कारण तुम्हारी शान्ति भंग नहीं होती तो तुम कोई चिन्ता नहीं करते, जिन लोगों को इस ज्वाला का अनुभव नहीं उनको हमारे बात की ओर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है। हमारी बात को वह लोग हमझेंगे जिन लोगों को इस ज्वाला का अनुभव हो गया है। और वह उसको बुझाना चाहते हैं, हमारी बात उन लोगों के इस ज्वाला को बुझाने में सहायता करेगी।

तुम ने इस ज्वाला का अनुभव कर लिया इसको

लपट को देखकर डर गये और बजाय सूरमा बनकर इसका सामना करके बुझा देने के भयभीत होकर कायर बन गये और इससे बचने के हेतु ओट या शरण ढूंढने लगे। याद रक्खो प्रकृति सूरमाओं की सहायता करती है और कायरों पर कोड़े बरसाती है। इस ज्वाला से बचने के हेतु तुमने राम या कृष्ण की शरण ली और गृहस्थ बन गये। पढ़ा लिखा स्त्री संतान, मान व बड़ाई की शरण ली और तुम लोग लोभ में फंस गये। तुमने कागज की नाव बनाई जो पानी में पड़ते ही स्वयं गल गई और तुम्हारा साथ छोड़ दिया तुमको पार उतारना तो दूर की बात रही, तुमने बादल की छाया में अपनी खाट बिछाई जिसको हवा ने उड़ा दिया और तुमको धूप में डाल दिया। समय आया जब सभी सुत धन धाम मान व बडाई ने तुम्हारा साथ छोड़ दिया या तुम स्वयं इनका साथ छोड़कर चल बसे किसी ने तुम्हारा साथ नहीं दिया तुम्हारी दशा धोबी के कुत्ते की हो गई तुम न घर के रहे न घाट के। कभी सुख भोगते कभी दुख भोगते हो। आवागमन से मुक्त नहीं हुए। तुम्हारी ज्वाला नहीं बुझी।

इसका अनुभव होने पर तुमने राम को छोड़ा गृहस्थ को त्याग दिया और बैराग की शरण ली। द्वेष

इर्ष्या और मतसर मोल ले लिया कहने को तुमने स्त्री, सुत, धन, धाम, मान व बडाई त्याग दिया मगर तुममें इनके त्याग का मोह बना रहा। राग में तुम लोभ में फंसे थे जिसमें कम दुख था वैराग में मोह में फंस गये और तुम्हारा दुख दुगना हो गया तुम बद से बदतर बन गये। जिसका समर्थन कबीर साहब ने इस प्रकार किया है :

राजा दुखिया प्रजा दुखिया,
जोगी के दुख दूना।
कह कबीर सुनो भई साधो,
एको महल न सूना॥

पहले अगर इस ज्वाला से बचने के लिए शाल ओढ़ते थे और गला सोने की चैन में बधा था तो अब तुमने कम्बल ओढ़ लिया और हाथ पाँव तथा गला तीनों को लोहे के जंजीर में बाँध लिया। राग में तो लालच बस काम काज करते थे स्वयं खाते थे दूसरों को भी खिलाते थे स्त्री सुत धन धाम मान व बडाई भी किसी का आसरा नहीं था समय आसानी से कट जाता था, मगर वैराग में दूसरे के आश्रित

हो गये । भीख माँगकर खाने लगे। राग में तो सुन्दर दिखाई देते थे, वैराग्य में कुरूप हो गये । एक शायर ने कहा है :—

शेख ने मस्जिद बनायी,
बरबाद बुतखाना किया ।
जब तो एक सुख की थी,
अब साफ विराना किया ।।

यह देख कर तुमने वैराग्य को भी छोड़ा और बुद्धि की शरण ली और अहंकारी बन गये । अहंकार आ गया ग्रहण त्याग या राग वैराग दोनों की निरख परख और नाप तोल करने लगे, ज्ञानी वनकर ज्ञान। में अटक गये विज्ञानी नहीं बने ।

इन तीनों में से किसी में शरण देने की शक्ति नहीं देखी । तुमको अनुभव हो गया कि राग ने लोभ का सहारा लिया है,वैराग्य ने मोह का सहारा लिया है और बुद्धि ने अहंकार का सहारा लिया है यह तो स्वयं आश्रित होने के कारण अपूर्ण हैं यह तो स्वयं कुछ लेना चाहते हैं यह तुम्हारी सहायता क्या करेंगे यह आपसे कुछ लेना चाहते हैं देना नहीं जानते तुममें उदासीनता आ गई तुमने प्रेम का मार्ग अपनाया

प्रेमपूर्ण है प्रेम लेना नहीं जानता प्रेम देना जानता है। मालिके कुल को तुम्हारी दशा पर क्षोभ हुआ वह पहले ही से तुम्हारी दशा देखकर पूर्ण पुरुष के रूप में विद्यमान था अवसर देख रहा था जब तुम इन तीनों से उदास हो गये, उदासीनता के आते ही वह गुरु के रूप में तुमको मिल गया। तुमने उससे प्रेम का नाता जोड़ा। उसकी सेवा टहल की, उसका सत्संग किया, उसकी आज्ञा का पालन किया, वह तुम्हारे सच्चे प्रेम से प्रसन्न हो गया, मगर जिस तरह पिता यह चाहता है कि तुम पढ़ लिखकर स्वाबलम्भी हो जाओ और वह चाहने लगा तुम से उनका गला घुट जाये। उसने तुम को सुरतशब्द योग का मार्ग बताया जिससे तुम देहदारी गुरु को छोड़कर अपने अन्तर में सत्गुरु को प्रगट करके उसका सहारा छोड़ दो। तुम्हारे हार्दिक प्रेम व परिश्रम तथा गुरु की दया से तुम्हारे अन्तर सत्गुरु शब्द व प्रकाश के रूप में प्रगट हो गया, तुममें विवेक शक्ति आ गई तुम हंस हो गये, कुछ दिनों तुमने शब्द व प्रकाश का आनन्द लिया मगर शान्ति प्राप्त नहीं हुई। शब्द व प्रकाश स्वयं और निज स्वयं के बीच परदा था मालिक की दया से यह परदा उठ गया। तुम्हारे स्वयं ने

निजस्वयं से मिलकर स्वयंपना खो दिया तुम्हारे हृदय की ज्वाला बुझ गई अब तुम संसार के भवसागर में प्रारब्धवश वैसे ही विचर रहे हो जैसे कमल पानी में रहता है, पानी में वह पैदा होता है, पानी में उसका पालन पोषण होता है और पानी ही उसका घर है मगर पानी का कोई प्रभाव उस पर नहीं है। वह स्वयं शोभायमान होता है और पानी तथा झील को सुशोभित करता है। राग वैराग्य व बुद्धि तथा संसार में प्रेम रखते हुए इनका आदर सत्कार करोगे मगर इनमें फंसोगे नहीं तुम्हारा पालन पोषण इन्ही से हो गया मगर तुम इनसे प्रभावित नहीं होंगे। तुम सब काम करोगे मगर तुम्हारे सब काम निष्काम होंगे। तुम संसार को सुशोभित करोगे तुम्हारे सुगन्ध में संसार सुगन्धित हो जायेगा और भौंरे तुम्हारे चारों ओर मंडराया करेंगे। तुम पूर्णिमा का चन्द्रमा बनकर इस श्रृष्टि को शीतल प्रकाश शान्ति के रूप में प्रदान करते रहोगे जो तुम्हारा स्वाभाविक कार्य होगा। दाता दयाल की नज्म व शब्द हमारे लेख का समर्थन करता है।

नज़्म

न अपना नाम रखना तुम,
न दुनियाँ में निशां रखना।
नहीं की जब हुई आदत,
ज़बा पर फिर न हाँ रखना।।
मुकिर होना अबस है,
और मुनकिर होना है ग़ल्ती।
न सर में ऐसे सौदा का,
कभी बारे गिरां रखना।
न साहिबे दिल न बे दिल,
बनने की तुममें हविश आवे।।
न दिल देना न दिल लेना।
न वहमें दिल सता रखना।।
अगर है तर्क कर दो,
तर्क का भी तर्क वेशुवहा।
मकां जब छुट गया फिर क्यों,
ख्याले ला मकां रखना।।
खामोशी मानिये दारद,
कि दर मुफ्तन नमी आयद

न सत्त को झूठ कहने के लिये,
मुंह में ज़्वां रखना ।।
पिला दे भक्ति आ ऐसा प्याला,
ममत्व मैं अपने मन का खोदूं ।
न सुध रहे और न बुद्धि रहे कुछ,
अहंग पना सारा मन का खो दूं ।।
जपूं तपूं और भजूँ न सुमिरू,
न योग युक्ति के पँथ दौड़ूँ ।
न नाम की माला हाथ में हो,
हिये की माला का मनका खो दूं ।।
वह राग क्या जिसमें राग आवे,
वह त्याग क्या त्याग में फंसावे ।
न बंध मुक्ति का हो खटा,
विवेक घर व बन की खो दूं ।।
न दुख की दुविधा न सुख की चिन्ता,
न चित की चंचलता का भय हो किंचित ।
न ज्ञान व ध्यान की हो इच्छा,
विचार साधन, जतन का खो दूं ।।
न द्वन्द निद्वन्द का हो झगड़ा,
न द्वैत अद्वैत का बखेडा ।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

झुकके सिर राधास्वामी पद में,
विचार तक दासपन का खो दूं ।

नोट :—इस लेख के विस्तार पूर्वक समझने हेत "अनुभव सार" प्रकाशक मानवता मन्दिर अध्ययन करो ।

राधास्वामी

दयाल मानवता प्रचारक सभा दिल्ली की साधारण सभा का वार्षिक बैठक दिनांक १३-१-८० को श्री कृष्ण लाल अग्रवाल जी की अध्यक्षता में सभा के कार्यलय दु. नं. १०६ के पीछे शंकर रोड राजेन्द्र नगर नई दिल्ली में समाप्त हुई ।

सभा की बैठक में 1978-79 तथा 1977-78 का ओडिटर किया हुआ हिसाब भी पेश किया गया जो सर्व सम्मति से स्वीकार किया गया ।

वार्षिक चुनाव भी समाप्त हुए जिसमें निम्न-लिखित पत्राधिकारी निर्बिरोध चुने गये :

1) प्रधान : श्री कृष्ण लाल अग्रवाल

उप प्रधान : श्री द्वारकादास

श्री मनोहर लाल खुराना

महा मंत्री : श्री नन्द लाल उर्फ, आनन्द दयाल

मंत्री : श्री प्रभू दयाल मीतल

श्री वृज लाल घई

कोषाध्यक्ष : श्री एस. एस. सेठ

लाईब्रेरियन : पं: मोहन लाल

कार्यकारिणी सदस्य :—श्री जगदीश चन्द्र लिखा श्री मुसद्दी लाल गुप्ता, श्री पदम नाथ सचदेवा, श्री एस. सी. चड्डा, श्री घनश्याम दास अदलखा, श्री तिलक राज, श्री प्रभात चन्द्र, श्री छोटे लाल श्रीमती हरबंस कौर, श्री राजेन्द्र कुमार गुप्ता, श्री आर. एन. चन्दर, श्री मोहन लाल नैयर, श्री ओ. पी चोपड़ा।

भवदीय :

प्रभूदियाल मीतल

सत्गुरु

ले० दुर्गा दास 'चमन'

सतगुरु कौन जो सब से न्यारा, जिसको उसका हुक्म प्यारा।
सतगुरु कौन जो वन्धन काटे, तीन ताप का दुख न व्यापे।
सतगुरु कौन जो समता जाने, विना हुक्म के कुछ न माने।
सतगुरु कौन जो देह से न्यारा, तीन लोक को जिसने धारा।
सतगुरु कौन जो मोक्ष का साथी, जिसके दर पर हुक्म का हाथी।
सतगुरु कौन जो सत् को जाने, दुख और सुख को सम कर माने।
सतगुरु कौन जो शब्द सनेही, देह धार कर बना विदेही।
सतगुरु कौन जो ममता मेटे, सतपुरुष से सिष्य को भेटे।
सतगुरु कौन जो है सम दृष्टि, जिसके मुख पर हुक्म की
वृष्टि।
सतगुरु कौन जो बन्ध छड़ाए, पल में सिष्य के भर्म मिटाए।
सतगुर कौन जो है दुःख हर्ता, अपने जैसा सब को कर्ता।
सतगुरु कौन जो धुर का वासी, उन चरणों की बन जा दासी।
सतगुरु कोन जो जान ले उसके भाग करोड़।
प्रीत छोड़ सब और की अब सतगुर से जोड़॥

बैसाखी सतसंग
13. 14, अप्रैल 1980

बैसाखी का सतसंग हर वर्ष होता है। इस वर्ष भी होगा। मैं अपने आप से पूछता हूं कि तुमने यह स्यापा क्यों गले डाला हुआ है? मजबूरी। यह संसार जिसमें हम रहते हैं यह सारे का सारा ही स्यापा है। मेरा भाग्य! मौज मालिक! उस अपने आप घर की तलाश के सिलसिले में 1905 ई. में एक दृश्य द्वारा दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज के चरणों में ले आई। वहां से मुझे यह राधास्वामी मत या संतमत मिला। इस में सब से अधिक बल शुद्ध आचरण, गुरु की महिमा और अनहद मार्ग पर दिया गया है।

मैं 94 वर्ष का हूं। मेरी सारी आयु इस तलाश में गुजर गई। हिन्दुओं ने कुछ कहा, वेदान्त ने कुछ कहा, मुस्लमान, ईसाई और निरंकारी आदि जितने मत मतान्त्र हैं सब में मत भेद केवल शब्दों

का है। यह केवल संतमत में ही अनहद मार्ग नहीं बल्कि उपनिषदों के ऋषियों का भी यही मार्ग है मगर सत कबीर साहिब जो आद संत माने जाते हैं वह सतगुरु किस को मानते हैं ? उनकी बानी है :

सन्तों सो सतगुरु मोहे भावे
जो आवागमन मिटावे ।
डोलत डिगे न बोलत बिसरे
अस उपदेश दृढ़ावे
बिन भ्रम, हठ, किरया से न्यारा
सहज समाध लगावे
द्वार न रोके पवन न रोके
न अनहद उरझावे ।

मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा आजकल सब जगह गुरमत का ज़ोर है। सब संतमत वाले अपने अपने चेलों को कोई न कोई नाम देते रहते हैं मगर कबीर साहिब का शब्द कहता है कि सतगुरु वह पूर्ण हस्ती है जो इन्सान को अनहद शब्द में भी न फंसावे। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं क्या उन्होंने सच्च लिखा है ? मेरे निज जीवन का अनुभव मुझे सिद्ध करता है कि उन्होंने ठीक कहा है। इस लिए मैं इस बैसाखी पर अपने 94 साल के जीवन का अनुभव जो अनहद से भी परे

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

की अवस्था है वह बताऊंगा। जो सज्जन परम सच्चाई और हकीकत की चाह रखते हैं केवल वही पधारें यह कोई मेला नहीं है। ठहरने और भोजन का प्रबन्ध मानवता मन्दिर का ट्रस्ट करेगा। आने वाले सज्जन अपना बिस्तर साथ लायें।

दाता से प्रार्थना है कि यह मेरी अन्तिम बैसाखी हो। गुरु ऋण सिर पर था उतारना चाहता हूं।

फकीर

अपना कर्मभोग अथवा मौज मालिक

अब मैं 94 साल का होने वाला हूं पिछला सारा जीवन मेरे सामने आता है। राम को मिलने के लिए चला था। राम का पता लगा अपने घर का भी अनुभव हुआ। प्रारब्धकर्म या मौज आधीन मजबूरन घसीटा जा रहा हूं।

जि़न्दगी के अमली पहलू के तजुर्बे के बाद ख्याल आया कि जब तक इन्सान का इखलाक व नीयत साफ नहीं वो किसी सूरत में रूहानियत अथवा अनुभव या सारभेद या शांति कहलो प्राप्त नहीं कर सकता। इस शिक्षा के लिए मानवता मन्दिर की बुनियाद रखी थी कि सेंटर के बग़ैर गुज़ारा न था। ट्रस्ट के कानून के अनुसार जो दान यहां आता है वह उसी वर्ष में कुछ प्रतिशत रखकर सारा खर्च करना आवश्यक है। मौज या बदकिस्मती कहलो मेरी कि अमरीका से रामदेव राव ने चोहत्तर हज़ार पांच सौ

रुपया दान में भेजा। उसे खर्च करने के लिए इस वर्ष शिशु शिक्षा केन्द्र और छापा खाना खोले गये हैं। शिशु शिक्षा केन्द्र में निर्धन बच्चे लिए जाते हैं और उनसे कोई फीस नहीं ली जाती है। उनको वर्दी भी दी जाती है। उनके माता पिता को लिखकर देना होता है कि वे तीन बच्चों से अधिक पैदा न करेंगे। जिन लोगों ने ऐसा लिख दिया है वे अपने वचन का पालन करेंगे या नहीं, इस विषय में कुछ कह नहीं सकता। जो मासिक पत्र व पुस्तकें ट्रस्ट छापता है उनका कोई मूल्य नहीं लिया जाता है। हमारी पुस्तकों का प्रकाशन पंजाबी, हिन्दी तथा अंग्रेजी तीन भाषाओं में होता है। इस समय अंग्रेजी की निम्नलिखित किताबें हैं।

अंग्रेजी भाषा में साहित्य

1. A Word to Americans.
2. A Word to Canadians.
3. Manvata the true religion.
4. Religious Reserch. 5. Weight of Soul.
6. Truth Always Wins. 7. Essence of Truth
8. Science of God Realization.
9. True Sanatan Dharma or True Religion of Humanity.
10. Jeewan Mukti. 11. Art of happy living.
12. Key to Freedom. 13. Broadcast of Reality in

हिन्दी में साहित्य

1. अनुभवसार।

1. ਪੰਜ ਨਾਮ ਦੀ ਵਿਗਿਆਨਕ ...
ਦਾ ਨਿਚੋੜ ਮਾਨਵਤਾ। 3. ਸਚਾਈ ਦਾ ...
5. ਮਾਨਵ ਕਲਿਆਣ। 6. ਸੱਚਾ ਧਰਮ ...

ट्रस्ट ऐलोपैथिक और होम्योपैथिक अ... रहा है। इन सब कामों में बड़ा पैसा ख... है। आमदनी को देखते हुये आगे ट्रस्ट को पता नहीं कि यह सभी सेवायें चला सके। ऐलोपैथिक दवाखाने की सहायता के लिये सरकार से सहायता चाही है पता नहीं क्या सरकार निर्णय करे ? हो सकता है ऐलोपैथिक हस्पताल बंन्द करना पड़े किन्तु शिशु शिक्षा केन्द्र तथा प्रकाशन चलता रहेगा। यथार्थ ज्ञान और साफ ब्यानी के कारण इतना धन नहीं आता। मानव मन्दिर की3800 कापियां प्रतिमास जाती हैं किन्तु थोड़े लोगों ने ही उसके प्रकाशन में सहायता की है। बाकी मुफ्त का माल समझ कर मंगाते हैं। जिन लोगों की इच्छा साहित्य पढ़ने की है वे मंगवा सकते हैं। मेरी वर्णन शैली में रोचक तथा भयानक बातें नहीं हैं। इसी कारण धन का अभाव है। मैं नहीं कहता कि आप लोग अवश्य ही मन्दिर की सहायता करें।

जो देता है उसको मिलता है। मानव मन्दिर भेजने में मेरा कोई एहसान नहीं। जो मुफ्त का

...ल समझ कर मंगवाते हैं उनसे प्रार्थना है कि वे मंगवाना बंद कर दें ताकि हमारे खर्चे में कमी आवे। ट्रस्ट से अब तक गरीबों दु:खियों व असमर्थ विद्यार्थियों को मासिक सहायता दी जा रही है लगता है वह भी बंद करनी पड़ेगी।

मैंने सोचा था कि अगर सत्य जो मैंने समझा है, जिसकी पुष्टी कबीर साहब व स्वामी जी ने भी की है और जो इस सनातन धर्म की ऊंची शिक्षा के अनुसार भी ठीक है, समाज को इस शिक्षा से लाभ होगा, मगर मैं देखता हूं कि सच्चाई को लोगों को आवश्यकता नहीं। संसार को शांति व परमार्थ या यथार्थ ज्ञान नहीं चाहिए। मैं सोचता था इस सच्चाई से लोग अपना जीवन सफल बनाएंगे व शांति प्राप्त करेंगे मगर ऐसा नहीं हुआ।

फकीर

मानवता मन्दिर में अगला मासिक सतसँग

16-3-[illegible] होगा ।

Regd.No. 26265/74 MARCH 10th 1980
MANAV MANDIR P/HSP—7

ADDRESS

To

Sh. K[illegible]han Lalji
[illegible] Radha So[illegible]
Satsang Bhawan

From :

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.
Phone : 2022